RJPP, Vol. XXIII, No.II, April 25-Sept.25, ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411, Impact Factor 8.858
https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.026

उपनिवेशवाद और भारत

डॉ0 प्रताप कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान विभाग)
वी0 वी0 (पी.जी) कॉलेज, शामली
इमेलः pratapsaroha@gmail.com

सारांश

प्राचीन काल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। धीरे–धीरे जैसे–जैसे औद्योगिकरण प्रारंभ हुआ उसी के साथ अपने सामान को बेचने के लिए बाजार की आवष्यकता महसूस हुई। उपनिवेषवाद की उत्पत्ति आर्थिक हितों से हुई लेकिन इसके साथ राजनीतिक प्रतियोगिता, धार्मिक व सांस्कृतिक फैलाव ने इसे मजबूती प्रदान की। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद का कारण –भारत की अथाह प्राकृतिक संपदा, बड़ा उपभोक्ता बाजार व कच्चे माल की उपलब्धता थी। उपनिवेशवाद ऐसी राजनीतिक आर्थिक प्रक्रिया है जिसमें कोई भी शक्ति संपन्न राष्ट्र अन्य कमजोर राष्ट्र या क्षेत्र पर अपने नियंत्रण को स्थापित करता है। और कमजोर देश की भूमि संसाधनों, श्रम व बाजार का शोषण करता है। इसमें केवल राजनीतिक अधीनता ही नहीं बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व भी स्थापित हो जाता है। ''भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद केवल शासन नहीं था बल्कि एक ऐसी संरचना थी जिसका उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनाना था''–विपिन चंद्र

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 04/08/25
Approved: 25/08/25

डॉ0 प्रताप कुमार

उपनिवेशवाद और भारत

RJPP Apr.25-Sept.25, Vol. XXIII, No. II, Article No.26 Pg. 201-206

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no2-261

https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.026

"उपनिवेशवाद का सार यह है कि उपनिवेश को शासक देश के हितों के लिए संसाधनों का प्रदायक और बाजार बनाया जाए।"–इरफान हबीब

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने न केवल प्रशासनिक संरचना को बदला बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था, शिक्षा, संस्कृति और राजनीतिक चेतन पर गंभीर प्रभाव छोड़ा। दो सौ वर्ष तक चले इस औपनिवेशिक शासन ने भारत को एक "आर्थिक उपनिवेश" के रूप में बदल दिया।

यह शोध पत्र भारत में उपनिवेशवाद की उत्पत्ति, विकास और प्रभावों का विभिन्न आयामों में अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शोध का उद्देश्य–

1. भारत में उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
2. भारतीय समाज राजनीति और अर्थव्यवस्था पर औपनिवेशिक नीतियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में उपनिवेशवाद की भूमिका का मूल्यांकन।
4. स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष में उपनिवेशवाद की भूमिका का अध्ययन।

शोध पद्धति–

यह अध्ययन ऐतिहासिक–विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है इसमें मुख्यतया द्वितीयक स्रोत (इतिहासकारों की पुस्तकें, शोध आलेख) आदि का उपयोग किया गया है।

भारत में उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–

भारत में उपनिवेशवाद का इतिहास अत्यधिक जटिल है। यह केवल राजनीतिक अधीनता ही नहीं है बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक और मानसिक गुलामी की भी प्रक्रिया रही है। उपनिवेशवाद के अतीत को समझने के लिए भारत में बाहरी आगमन से लेकर ब्रिटिश साम्राज्य के उदय को समझना होगा। प्राचीन काल से ही भारत व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का केंद्र रहा है। अरबी, फारसी व अन्य देशों के व्यापारी भारत आए थे और उनके द्वारा यहां की संपन्नता का वर्णन किया गया। मध्यकाल में विशेष कर 12वीं शताब्दी के बाद तुर्क और अफगान शासको ने भारत में राजनीतिक वर्चस्व स्थापित किया। यह उपनिवेशवाद नहीं था बल्कि शासन परिवर्तन था।

15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भूगोल संबंधी खोजो के पश्चात यूरोपीय ताकतों ने भारत की ओर प्रस्थान किया। 1498 ई० में वास्कोडिगामा के केरल (कालीकट) आने से भारत में यूरोपीय हस्तक्षेप का आरंभ हुआ। सबसे पहला पुर्तगाली आए तथा गोवा, दीव, दमन जैसे क्षेत्रों पर नियंत्रण किया। इसके पश्चात दच, फ्रांसीसी और अंत में अंग्रेज भारत पहुंचे। अंग्रेजों ने 1600 ई० में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। शुरुआती चरण में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापारिक हितों के लिए भारत में कारखाने और गोदाम स्थापित किये। धीरे–धीरे कंपनी ने भारतीय शासको के बीच संघर्षों और राजनीतिक स्थिरता का लाभ उठाकर अपना प्रभुत्व स्थापित करते रहे। प्लासी (1757) तथा बक्सर (1764) की लड़ाइयों के बाद अंग्रेजों ने बंगाल पर कब्जा कर लिया। इसके बाद भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की मजबूत नींव रखी गयी। 1765 में अंग्रेजों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी (राजस्व वसूलने का अधिकार) मिल गया। इस प्रकार शनेः शनेः कंपनी ने सैन्य शक्ति,

कूटनीति सहायक संधियों और छल–कपट के माध्यम से पूरे भारत पर अधिकार स्थापित कर लिया। 1857 ई0 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश क्राउन ने सीधे भारत की बागडोर अपने हाथों में ले ली और भारत एक औपनिवेशिक साम्राज्य बन गया।

भारत में उपनिवेशवाद का स्वरूप विविध आयामी रहा। एक तरफ तो अंग्रेजों ने आर्थिक शोषण करते हुए भारत को कच्चे माल के स्रोत और अपने उद्योगों के बाजार में बदल दिया। वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजों ने शिक्षा, कानून और प्रशासन में सुधारो की आड़ में अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता को थोपने का प्रयास किया। इस स्थिति ने भारतीय समाज को एक तरफ आधुनिकता की दिशा में प्रेरित किया तो दूसरी तरफ असमानताओं और हीन भावना को जन्म दिया। उपनिवेशवाद का प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज पर बहुत विनाशकारी रहा परंतु इसी ने भारतीय राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता आंदोलन की भूमि तैयार की। ब्रिटिश शासन के शोषण और दमन ने भारतीय जनता में इस स्वतंत्रता की चेतना जगाई जो अंत में स्वतंत्रता आंदोलन का आधार बनी। इस प्रकार भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद का इतिहास ने केवल राजनीतिक घटनाओं का इतिहास है, बल्कि यह भारतीय समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के गहने परिवर्तन का भी आयना है।

भारत में उपनिवेशवाद के कारण–

उपनिवेशवाद की भारत में स्थापना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी बल्कि यह अनेक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक कारणों का परिणाम था। विदेशी ताकतों को भारत की आंतरिक परिस्थितियों को भुनाया तथा धीरे–धीरे अपनी जड़े गहरी की। प्राचीन तथा मध्यकाल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था भारत का कपड़ा उद्योग, रत्न, मसाले और कृषि उत्पादन यूरोप के लिए बहुत आकर्षक थे। औद्योगिक क्रांति के पश्चात यूरोप को कच्चे माल (कपास, नील, अफीम आदि) और ब्रिटिश उद्योगों द्वारा बनाए गए माल के लिये बड़े बाजार की आवश्यकता थी जिसे भारत नें पूर्ण किया। पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज भारत में व्यापारिक अवसरों के लिए प्रतिस्पर्धा करते रहे इसमें अंग्रेज अंत में विजयी हुए और व्यापार से राजनीतिक नियंत्रण तक पहुंच गये।

18वीं शताब्दी में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल सत्ता कमजोर हो गयी। प्रांतीय सत्ता स्वतंत्र हो गयी तथा साम्राज्य छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। मराठी, हैदराबाद, मैसूर, पंजाब आदि जैसे राज्य आपसी संघर्षों में उलझ गये। अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो की नीति से उनकी कमजोरियो का लाभ उठाया। इसके साथ यह भी सत्य है कि विदेशी आक्रमणों के समय भारत में कोई शक्तिशाली और संगठित नेतृत्व तो नहीं था जिस कारण अंग्रेज अपनी सत्ता स्थापित करने में सफल रहे। भारतीय समाज जाति प्रथा तथा छुआ–छूत से त्रस्त था। सामाजिक एकता के अभाव ने ब्रिटिश लोगों को भारतीय जनता को संगठित होने से रोकने में मदद की।

हिंदू–मुस्लिम तथा अन्य धार्मिक समूहों के मध्य तनाव व मनमुटाव ने विदेशी शासको को सत्ता स्थापित करना बहुत आसान कर दिया। बाल विवाह, सती प्रथा तथा अशिक्षा आदि सामाजिक कुरीतियों ने समाज को कमजोर किया जिससे हम विदेशी सत्ता का विरोध प्रभावी ढंग से नहीं कर सके।

विदेशी सेवाएं अनुशासन और प्रशिक्षण में भारतीय सेवाओं से उच्च थी जिससे वह युद्ध में अधिकतर विजयी रहती थी, अंग्रेजों के पास आधुनिक हथियार, तोपे तथा जल शक्ति थी जबकि

भारतीय शासक परंपरागत साधनों पर निर्भर थे। भारत में उपनिवेशवाद का एक कारण यह भी था कि यूरोपीय देशों कि यह मान्यता थी कि वह एशिया, अफ्रीका के देशों को सभ्य बनाने के लिए यहां शासन कर रहे हैं। धार्मिक प्रसार द्वारा उपनिवेशवाद को उचित ठहराया गया। एक लंबी अवधि तक विदेशी व्यापारियों को भारत में मेहमान माना गया। जिस कारण उनके बढ़ते प्रभाव का समय पर विरोध नहीं हो सका। भारत में उपनिवेशवाद के पनपने के विभिन्न कारण रहे जैसे– आर्थिक लालच, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विघटन तथा कमजोर तकनीक। इन कारणो के सामूहिक प्रभाव ने अंग्रेजों को भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने का रास्ता दिया। उपनिवेशवाद केवल अंग्रेजों की महत्वाकांक्षा का परिणाम नहीं था अपितु तो भारतीय समाज और राजनीति की कमजोरी को भी दर्शाता था।

भारत पर उपनिवेशवाद के प्रभाव–

भारत पर उपनिवेशवाद के प्रभाव के अनेक आयाम रहे हैं। उपनिवेशवाद आर्थिक संरचना, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक जीवन और मानसिक चेतना पर गंभीर प्रभाव डालने वाली प्रक्रिया थी। उपनिवेशवाद द्वारा भारतीय स्वाधीनता का ह्रास हुआ। भारत की राजनीतिक शक्ति धीरे–धीरे अंग्रेजों के पास चली गयी। अंग्रेजों ने कानून व्यवस्था, प्रशासन, पुलिस और न्यायपालिका की व्यवस्था अपने हितों की पूर्ति के लिए की न कि भारतीयों के हितों के लिये। ब्रिटिश सत्ता द्वारा भारतीय औद्योगिक व्यवस्था का विनाश किया गया। भारत का हस्तशिल्प और कपड़ा उद्योग नष्ट कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित व्यवस्था द्वारा आयात–निर्यात का संतुलन बिगाड़ दिया गया। इससे भारत 'कच्चे माल का स्रोत' और 'ब्रिटिश माल का बाजार' बन गया। किसानों को उन फसलों को उगाने के लिए मजबूर किया जो ब्रिटिश शासन के लिए अधिक लाभ की थी अर्थात कृषि का व्यवसायीकरण किया गया, जिससे खाद्यान्न उत्पादन प्रभावित हुआ और अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई। भारी राजस्व वसूली ने किसानों और आम जनता को निर्धन बना दिया।

ब्रिटिश उपनिवाद के कारण अनेक सामाजिक सुधार आन्दोलनों का उदय हुआ। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा और छूआछूत जैसी बुराईयों को समाप्त करने के लिए अनेक समाज सुधारको द्वारा प्रयास किये गये। अंग्रेजी शिक्षा से शिक्षित होकर भारत में एक नये मध्यवर्ग का जन्म हुआ जिसने भविष्य में स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतृत्व किया। 1835 की लॉर्ड मैकाले की नीति के बाद अंग्रेजी शिक्षा का दायरा बढा जिसने भारतीयों को आधुनिक विज्ञान, इतिहास और दर्शन में निपुण बनाया। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के उदय से सामाजिक–राजनीतिक चेतना का प्रसार हुआ।

अंग्रेजो के 'श्वेत श्रेष्ठता' की अवधारणा के माध्यम से भारतीयों में हीन भावना का प्रसार किया, इसके विपरीत भारतीय नेताओं व बुद्धिजीवियों ने भारतीय संस्कृति और परंपराओ को गौरवपूर्ण बताया। उपनिवेशवादी शोषण ने ही भारतीयों में स्वतन्त्रता और आत्मनिर्भरता की अलख जलाई।

उपनिवेशवाद और स्वतंत्रता आन्दोलन

भारत का स्वतंत्रता संघर्ष उपनिवेशवाद की देन था। ब्रिटिश शोषणकारी शासन ने भारतीय लोगों में अंसतोष, राष्ट्रवादी चेतना और स्वतंत्रता के विचार को जन्म दिया। इतिहासकार विपिनचन्द्र लिखते हैं–''भारतीय स्वंतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की लडाई नही थी बल्कि यह

औपनिवेशिक शोषण के विरूद्ध एक व्यापक सामाजिक–आर्थिक संघर्ष भी की था''। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को सिपाही विद्रोह या भारत का पहला स्वतन्त्रता आन्दोलन कहा जाता है। इस आदोलन का कारण कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी का प्रयोग, भारी कर तथा सामान्ती वर्ग की नाराजगी रही। इस आदोलन का नेतृत्व मंगल पांडे, रानी लक्ष्मी बाई, तांत्या टोपे आदि ने किया यद्यपि यह आदोलन असफल रहा, लेकिन इसने अंग्रेजो की नींव हिला दी। राष्ट्रवाद के उदय के प्रथम चरण में मध्यममार्गी नेता (दादाभाई नरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले आदि) द्वारा सुधार की मांग की गयी। 1905 में बंग भंग के विरोध में स्वदेशी आन्दोलन हुआ। असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, डांडी यात्रा, भारत छोडो आंदोलन आदि गाँधी जी द्वारा चलाए गये। द्वितीय विश्व युद्ध से ब्रिटेन की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति कमजोर हो गयी। इस प्रकार औपनिवेशक शोषण से अंसतोष पनपा। अंसतोष से राजनीतिक चेतना को जन्म हुआ।राजनीतिक चेतना से धीरे–धीरे जनआंदोलन खड़ा हुआ जिसने स्वतंत्रता आंदोलन का रूप लिया।

भारत में उपनिवेशवाद के नकारात्मक पक्ष –

भारत में ब्रिटिश शासक द्वारा अनेक प्रकार के कठोर कर लगाये गये। रैयतवाडी, स्थायी बंदोवस्त तथा महालवाडी जैसी भूमि व्यवस्थाओं ने किसानो को कर्ज व गरीबी में दबा दिया। अंग्रेजी कपडा उद्योगो ने भारतीय हस्तशिल्प आदि को समाप्त कर दिया। दादाभाई नरोजी ने 'धन का निकास' सिद्वान्त बताया जिससे प्रत्येक वर्ष करोडो रुपये ब्रिटेन भेजे जाते थे। उपनिवेशवाद द्वारा राष्ट्र की सम्प्रभुता का हनन हुआ। 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाकर अंग्रेजो ने भारत को अनेक आधारों पर विभाजित किया जैसे– धर्म, जाति, क्षेत्र आदि। भारतीयों की राजनीनिक भागीदारी सीमित कर दी गयी तथा उच्च प्रशासनिक पदो पर केवल अंग्रेजो को ही नियुक्त किया जाता था। भारतीयों में सांस्कृतिक हीनता उत्पन्न की अर्थात हमारी संस्कृति, परम्पराओ को पिछडा घोषित किया। भारत में इसाईयों द्वारा धर्मांतरण कराया गया तथा जातीय और धार्मिक भेदभाव को प्रोत्साहन दिया। अंग्रेजो की शिक्षा प्रणाली शोषण कारी थी क्योकि अंग्रेजी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल'क्लर्क' बनाने का था। भारतीय सेना का उपयोग ब्रिटिश सत्ता द्वारा अपने साम्राज्य विस्तार के लिए किया गया। अंग्रेजो ने भारतीयों को यह अनुभव कराया कि वे अंग्रेजो से हीन है।

भारत में उपनिवेशवाद का सकारात्मक पक्ष

उपनिवेशवाद की मूल प्रवृति शोषणकारी है इसके बावजूद उपनिवेशवाद का एक सकारात्मक पक्ष भी दिखाई देता हैं। जब अंग्रेज भारत आये तो भारत अपने आप में बिखरा हुआ था, अंग्रेजो ने भारत को एक इकाई के रूप में संगठित किया। भारत में प्रशासनिक व्यवस्था, न्यायपालिका, पुलिस व्यवस्था आदि संस्थाओं का विकास किया। भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से बडा देश था लेकिन यहा परिवहन के अच्छे साधन नहीं थे अंग्रेजो द्वारा रेलवे, डाक और बंदरगाहो आदि द्वारा भारत के क्षेत्रों को आपस में जोडा। क्षेत्रों के आपस मे जुडने से व्यापार का विस्तार हुआ, नये–नये उद्योग लगाये गये। अंग्रेजो द्वारा भारत में जो शिक्षा प्रणाली प्रारम्भ की गयी उसके द्वारा भारतीयो में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वैचारिक दृष्टिकोण तथा राष्ट्रवाद विकसित हुआ। सामाजिक कुरीतिया जैसे बाल विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा और पर्दा प्रथा आदि को लेकर सामाजिक सुधार आन्दोलन किये गये।

अंग्रेजो द्वारा कानूनी व्यवस्था विकसित की गयी जिसमें दंड संहिता और सिविल कानून अब भी हमारे कानून में प्रमुख है। शिक्षा से जागृति आई जिससे अखबारों और पुस्तको के माध्यम से भारतीयों में चेतना विकसित हुई। चिकित्सा तकनीक तथा आधुनिक विज्ञान की शिक्षा का प्रसार हुआ।

निष्कर्ष–

भारत में उपनिवेशवाद के अतीत का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि विदेशी लोग भारत में व्यापार के लिए आये तथा यहाँ आकर अपने साम्राज्य की स्थापना कर ली। सामाजिक द्वेश, राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक लालच, तकनीकी का अभाव, धार्मिक द्वेश, जाति व्यवस्था आदि विभिन्न कारण भारत में उपनिवेशवाद के रहे है। भारत मे उपनिवेशवाद के सकारात्मक और नकारात्मक दोनो पक्ष दिखाई देते है जहाँ एक उपनिवेशवाद ने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक शोषण को बढावा दिया, दूसरी तरफ आधुनिक शिक्षा, सामाजिक सुधार, परिवहन व्यवस्था, डाक व्यवस्था, औद्योगीकरण और राष्ट्रीय चेतना आदि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में उपनिवेशवाद 'विनाशकारी अनुभव और नवजागरण का अवसर' देना था।

संदर्भ

1. चंद्र विपिन,'भारत का स्वतन्त्रता संग्राम' ओरिएंट ब्लेकस्वान, नई दिल्ली, 2014
2. गुहा, रामचन्द्र, India After Gandhi पिकाडोर इंडिया, 2007
3. चन्द्र विपिन 'भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास' आंरिएंट ब्लेक स्वान, नई दिल्ली, 2010
4. कुमार, सुशील, "भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और गांधीजी" किताब महल, इलाहाबाद, 2005
5. मजूमदार, रमेशचन्द्र "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख चरण" भारतीय विद्या भवन, मुंबई, 2002
6. नंदा, बी. आर., "नेहरू और भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन" राष्ट्रीय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
7. चौधरी, राधाकृष्ण, "स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास" लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998
8. बंथोपाध्याय, शेखर, "भारतीय स्वतंत्रता संग्रामः कारण और विकास" मैकमिलन इंडिया, 2015
9. समाचार पत्र व पत्रिकाए
10. इन्टरनैट व आधुनिक तकनीक